आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-128/2015-2017
प्रेषण :- कार्यालय शास्त्री सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

दैनिक

● मुद्रण तारीख - 24-02-2016 ● अंक-444 ● तारीख - 25 फरवरी 2016, फाल्गुन कृष्ण - 3 ● गुरूवार ● उदयपुर ● कुल पृष्ठ-04 ● मूल्य-1 रूपया

अनमोल वचन - श्री सत्यसांई

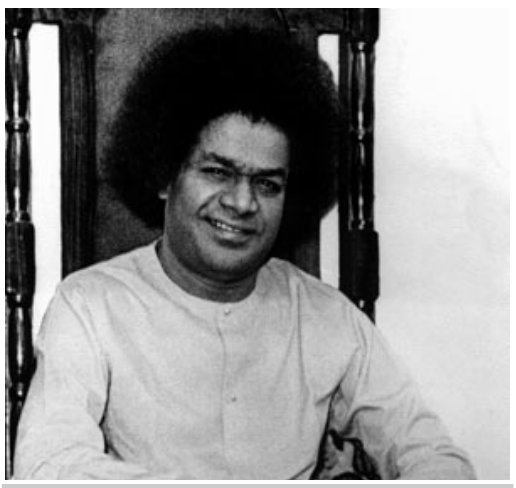

अपने घर को सद्गुण, नैतिकता प्रेम और संयम का केन्द्र बना डालो।

शलोक

प्रसन्नतां या न गताभिषेकतस्तथा
न मम्ले वनवासदुःखतः।
मुखाम्बुजश्री रघुनन्दनस्य मे
सदास्तु सा मंजुलमंगलप्रदा ।।

भावार्थः— रघुकुल को आनंद देने वाले श्री रामचन्द्रजी के मुखारविंद की जो शोभा राज्याभिषेक से (राज्याभिषेक की बात सुनकर) न तो प्रसन्नता को प्राप्त हुई और न वनवास के दुःख से मलिन ही हुई, वह (मुखकमल की छबि) मेरे लिए सदा सुंदर मंगलों की देने वाली हो ।।

शुद्ध करता है

स्नान तन को,
ध्यान मन को,
दान धन को,
योग जीवन को,
प्रार्थना आत्मा को,
व्रत स्वास्थ्य को,
क्षमा रिश्तों को,
और परोपकार किस्तम को
शुद्ध कर देता है।

डबल डेकर ट्रेन में जल्द देख सकेंगे मुफ्त में फिल्में व सीरियल

जल्द ही जयपुर—दिल्ली के बीच चल रही डबल डेकर एसी सुपरफास्ट एक्सप्रेस ट्रेन में आप मुफ्त में मनचाही फिल्म या टीवी शो देख पाएंगे। रेलवे के बीकानेर मंडल ने एक कंपनी से समझौता किया है, जिसके तहत यात्रियों को यह सुविधा मिलेगी। बीकानेर देश का पहला रेल मंडल है, जो चलती ट्रेन में मुफ्त मनोरंजन सुविधा मोबाइल, लैपटॉप पर उपलब्ध करा रहा है। यात्रियों के लिए तो यह सुविधा मुफ्त रहेगी , साथ ही रेलवे को भी प्रति कोच 1200 रुपए की आमदनी होगी।

फिलहाल बीकानेर—दिल्ली सराय रोहिल्ला इंटरसिटी एक्सप्रेस में इस योजना को शुरू कर दिया है। वरिष्ठ मंडल वाणिज्यिक प्रबंधक सीआर कुमावत ने बताया कि पिछले गत दिनों में 456 यात्रियों ने 363 घंटे इस सुविधा का लाभ लिया है। इसे जल्द ही जयपुर, जोधपुर और अजमेर में भी शुरू किए जाने की योजना है।

कंपनी ने एक बॉक्स विकसित किया है। इस बॉक्स की रीच 25 मीटर है और रेल कोच की लंबाई करीब 22 मीटर होती है। इसमें लगा हॉटस्पॉट सिर्फ कंपनी के विशेष एप्लीकेशन को संचालित करेगा। इसे आप एंड्रायड फोन पर डाउनलोड करिए और मुफ्त में 300 से अधिक फिल्में, गाने, सीरियल देख सकते हैं।

खास बात यह है कि इसे आप डाउनलोड कर घर भी ले जा सकते हैं। एप्लीकेशन का नाम प्रेस प्ले है।

निःस्वाद

विषया विनिवर्तन्ते
निराहारस्य देहिनः ।
रसवर्ज रसोऽप्यस्य
परं दृष्ट्वा निवर्तते।।

अर्थ —विषयों को त्याग देने पर भी उनका स्वाद (मन में आसक्ति) रह जाता है। भगवान के दर्शन होने पर वह स्वाद भी मन से छूट जाता है।

भगवान स्वामिनारायण ने अपने उपदेश वचनों में गीता (2—49) के इस श्लोक को याद करके कहा कि व्यक्ति को धीरे धीरे आहार कम करना चाहिए और मन को नौ प्रकार की भक्ति में रखना चाहिए, तभी वह सत्संग पथ पर चल सकता है अन्यथा भ्रष्ट हो जाता है।

भगवान स्वामिनारायण ने सात वर्ष वन में विचरण के दौरान पेड़ से स्वतः गिरे हुए फल खाकर ही निर्वाह किया था। अपने त्यागी परमहंसों को उन्होंने तप का बहुत कठिन पाठ दिया। भिक्षा माँगने पर जो अन्न मिले, उसे एक पोटली में इकट्ठा करके पानी में बार बार डुबोना, उसका सब रसकस निकल जाए, तब उसमें से थोड़ा कुत्ते को डालना। वह भी न खाए तब उस अन्न का एक गोला दिन में एकबार खाना। परमहंसों ने छह महीनों तक श्रीहरि की इस आज्ञा का सहर्ष पालन कर अपनी इंद्रियों पर विजय प्राप्त की और भगवान की प्रसन्नता भी !

जिह्वा इंद्रिय को जीतने का उपदेश प्रकट ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज ने अपने जीवन द्वारा कई प्रसंगों से दिया है। 1980 की साल में एक बार स्वामीजी भोजन कर

रहे थे, इस दौरान सेवक संत ने दो तीन बार कढी परोसी। भोजन पूर्ण हुआ, तब अन्य संत भोजन करने बैठे तो कढ़ी तुरंत ही मुँह से बाहर निकाल दी क्योंकि उसमें बू आ रही थी और स्वाद भी अत्यधिक खराब था। पता चला कि भूल से दही के बदले कई दिनों की जमा की हुई मलाई का उपयोग किया गया था। स्वामीजी से पूछा गया कि आपने बिना किसी प्रतिभाव सहजता से कैसे यह कढी खाई। तब स्वामीजी ने कहा —भगवान को थाल में यह भोग लगी, भगवान कुछ नहीं बोले तब हम क्यों कुछ कहें ?

भगवद् साक्षात्कार युक्त संत भगवान की मूर्ति के रस में तल्लीन रहते हैं, सांसारिक रसों का उन्हें भान नहीं रहता। गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा है, महाजनो येन गतः स पन्थाः। हम भी ऐसे महान पुरुषों के कदम पर चलते हुए इंद्रियों पर विजय पाएँ, यही श्रीहरि के चरणों में प्रार्थना है।

आनन्द तो श्रीकृष्ण ही देते हैं। वे आनन्द के स्वरूप हैं। जीव को भी आनन्द चाहिए। परमात्मा श्रीकृष्ण जीवमात्र को अपनी ओर खींचने के लिए लीलाएँ रचते हैं। श्रीकृष्ण लीला का एक रहस्य यह भी है कि इससे अनायास मन का निरोध होता है। मन संसार के विषयों से हट जाता है और परमात्मा के चरणों में भगवत्स्वरूप में टिक जाता है।

रोचक जानकारियां

- इंसान नींद में देखे गए 90 प्रतिशत सपने भूल जाता है।
- एक अनुमान के अनुसार दुनिया भर में प्रतिमाह छह हजार से अधिक कम्प्यूटर वायरस छोड़े जाते हैं।
- वर्ष 1987 में कमांड डॉटकॉम फाइलों को इन्फेक्ट करने वाला पहला कम्प्यूटर वायरस था।
- सिमेंटेक कंपनी द्वारा सन् 1990 ई. में बनाया गया नॉर्टन एंटीवायरस पहला एंटीवायरस प्रोग्राम था जो एक बड़ी कंपनी द्वारा बनाया गया था।
- सबसे बड़ा डायनासोर सिसमोसॉरस था जो 100 फीट लंबा और उसका वजन 80 टन तक होता था।
- दुनिया का सबसे बड़ा रेगिस्तान सहारा है जिसका आकार 35,00,000 वर्ग मील है।
- इंसान ने पहला औजार करीब 27 लाख वर्ष पहले बनाया था।
- केवल मादा मच्छर काटते हैं।
- मशहूर बार्बी गुड़िया का पूरा नाम बारबरा मिलिसैंट रॉबर्ट्स है।

बात पते की

एक जोकर ने लोगों को एक जोक सुनाया,
सब लोग बहुत हंसे,
उसने वही जोक दुबारा सुनाया तो कम लोग हंसे,
उसने वही जोक फिर सुनाया तो कोई नहीं हंसा।
फिर उसने एक बहुत प्यारी बात बोली :—
''अगर तुम एक खुशी को लेकर बार—बार खुश नहीं हो सकते हो तो एक गम को लेकर बार—बार क्यों रोते हो''

मानव मन के बोल

गया जी में पिण्डदान

गतांक से आगे.....

"काशी विश्वनाथ भगवान की जय"

मन ऐसा रोमांचित हो गया। यूं लगा कि हमारे, मेरे देह—देवालय की 70 हजार करोड़ खरब कोशिका नृत्य कर रही है।

रोम—रोम में उठी तरंगे, सब का मंगल होय रे।
तेरा मंगल, मेरा मंगल, जग का मंगल होय रे।

मैं कितना भाग्यवान हूं। जो देखो बंशी जी बावरा जी जैसे, कितने महान् संगीतज्ञ, कितने महान गद्यकार, पद्यकार, हजारों इन्होंने दोहे लिख दिये। और इनकी बड़ी ईच्छा है कि मेरी इस क्या भूलूं, क्या याद करूं! ज्यों की त्यों धर दी नी चदरिया। ये तुलसी बीरवा है—बाबूड़ा, आत्मकथा क्या? किसकी आत्मकथा? कौन सांस लिवा रहा है? कौन कार्बनडाई—ऑक्साईड छुड़वा रहा है? कौन ऑक्सीजन ले रहा है? परमात्मा। मनुष्य क्या अपनी आत्मकथा में कहे? खून की एक बून्द, पूरी दुनिया की सारी लेबोरेटरी मिलकर बना ना पाई। जो खून परमात्मा ने हमें दिया है। उसी खून से हमारा जीवन चल रहा है। इतनी धमनिया, इतनी शिराएं। पूरे विश्व के चार चक्कर लग जावे। अरे मनुष्य, मैं जब सारंगपुर में था। तो वहां प्रति सप्ताह दिन में एक बार एक गाना, जो अभी याद आ रहा है।

"मेरे देश की धरती सोना उगले उगले हीरे मोती।"
मरे देश की धरती।
हम उस देश के वासी है।
जिस देश में गंगा बहती है।

ये गाना, जिसे गा कर हम झूम उठते थे। तो मैं गंगा जी के किनारे अपने—आप को पा रहा हूँ। काशी में! गंगा मैय्या! धन्यवाद है—आपको।

उस समय मेरे पूज्य बापूजी, और परम् पूज्य माताजी, स्वर्गाश्रम पधारे थे। ऋषि केश स्वर्गाश्रम गंगाजी के तट पर, परमार्थ निकेतन आश्रम में कमरा लिया। थोड़ा—सा पैसा था। कभी—कभी मुझे लगता है कि मुझे और ज्यादा करना चाहिये। मुझे जितना करना चाहिये था पिता—माताजी के प्रति, उतना मैंने नहीं किया। अब तो माताजी—पिताजी को मोबाईल कॉल भी नहीं कर सकता। अब तो उनके चरणों में प्रणाम करके इस क्षण के बाद के जीवन को और अच्छा कर सकता हूँ उनकी कृपा से।

क्रमश अगले अंक में ...

प्रसन्नचित्त रहने के उपाय

उच्च साधना — परिवारजन साक्षात भगवान हैं। वे आपके हृदय के प्रेम के भूखे हैं। उनको प्रेम (प्रसन्नता) दीजिये। उनकी प्रसन्नता के लिये अपने बड़े से बड़े सुख को प्रसन्नता पूर्वक छोड़ दीजिये। उनकी प्रसन्नता के लिये बड़े से बड़े दुख को प्रसन्नतापूर्वक झेल लीजिये। बदले में उनसे अथवा अन्य किसी से भी किसी भी प्रकार की इच्छा मत रखिये। इस प्रेम साधना से आपको अपार प्रसन्नता मिलेगी और इन परिवारजनों में ही आपको प्रभु के दर्शन हो जायेंगे। श्रीरामचरितमानस में आया है —

हरि ब्यापक सर्बत्र समाना।
प्रेम तें प्रगट होहिं मैं जाना ।।

भगवान के कार्य — शरीर (शौच, स्नान, व्यायाम, भोजन, विश्राम आदि शरीरके कार्य हैं), घर, परिवारजन, नौकरी, व्यवसाय, समाज के सभी कार्यों को भगवान के कार्य मान कर पूरी सावधानी और ईमानदारी से भगवान की प्रसन्नता के लिये कीजिये। जब भगवान को दी गई प्रसन्नता लौट कर आपके पास आयेगी तो आपकी प्रसन्नता का पारापार नहीं रहेगा।

भक्त बन जाईये

भगवान को मेहमान मान कर भगवान की प्रसन्नता के लिये शरीर की भरपूर सेवा कीजिये। परिवारजनों को भगवान के स्वरूप मान कर उनको प्रेम दीजिये। सामान—सम्पति तो भगवान की धरोहर मान कर संभालिये व सदुपयोग कीजिये। आप भगवान के भक्त बन जायेंगे।

उन लोगों के लिए भी कुछ करें, जो बदले में आपके लिए कुछ भी नहीं कर सकते। अपने लिए कर्म करने से मनुष्य बँधता है और दूसरों के लिए कर्म करने से मुक्त होता है।

मैं ही श्रेष्ठ हूं ,यह है अहंकार

बड़ों से बात करने का तरीका आपके 'शिष्टाचार' को बताता है ......

और,.....छोटों से 'शिष्टाचार' से बात करने का तरीका आपके संस्कारों को प्रदर्शित करता है...

जो ताला चाबी को एक ओर घुमाने से बंद होता है, वही दूसरी ओर घुमाने से खुल भी जाता है !

हम अपने विचार, वाणी और व्यवहार को इस तरह घुमाएँ कि रिश्तों के बंद पड़े ताले फिर से खुल जाए......

जिसकी नीति अच्छी होगी, उसकी हमेशा उन्नति होगी।

मैं श्रेष्ठ हूँ, यह आत्मविश्वास है लेकिन, मैं ही श्रेष्ठ हूँ, यह अहंकार है।

तीर्थराज पुष्कर

राजस्थान के अजमेर शहर से 14 किमी. दूर उत्तर— पश्चिम में अरावली पहाड़ियों की गोद में बसा ''पुष्कर'' नाम का छोटा सा शहर भारत के प्रसिद्ध तीर्थ स्थलों में से एक है। पर्यटकों का स्वर्ग ''तीर्थराज'' पुष्कर, पद्म—पुराण के अनुसार सभी तीर्थो में श्रेष्ठ माना गया है। आज देश विदेश में अपनी विविध थाती परक आस्थाओं, मंदिरों, सरोवर और ग्राम्यांचल की सौंधी महक के लिये चर्चित यह नगर दुनिया में अकेला ऐसा स्थान है, जहाँ ब्रह्मदेव की पूजा की जाती है। यों तो पुष्कर की छोटी सी नगरी में 500 से अधिक मंदिर हैं, लेकिन प्रमुख मंदिरों से ब्रह्मा का 14वीं सदी में बनाया गया मंदिर प्रमुख है। संगरमरमर की बनी सीढ़ियों से ऊपर पहुँचकर मंदिर के गर्भगृह के ठीक सामने चांदी का कछुआ बना हुआ है। कछुए के चारों तरफ संगमरमर के फर्श पर सैकडों सिक्के जड़े हैं जिनपर दानदाताओं के नाम खुदे हुए हैं। इसके अतिरिक्त दूसरा प्रमुख मंदिर रंगजी मंदिर है। रंगजी को विष्णु का रूप माना जाता है।

इस मंदिर का सौंदर्य द्रविड़, राजपूत व मुगल शैली के अद्भुत समागम के कारण है। एक और प्रसिद्ध मंदिर सावित्री देवी का है। यह ब्रह्मा मंदिर के पीछे एक पहाडी पर स्थित है। मंदिर तक पहुँचने के लिए कई सीढियाँ चढनी होती हैं। मंदिर से नीचे पुष्कर सरोवर और आसपास के गाँवों का मनमोहक दृश्य देखने को मिलता है। ज्ञान अर्जना का भी केंद्र पुष्कर में एक प्रसिद्ध मंदिर विद्या की देवी सरस्वती का भी है। वे नदी भी हैं और उन्हें उर्वरता व शुद्धता का प्रतीक भी माना जाता है। यही कारण है कि सदियों से लेखक, कलाकार अपनी—अपनी कलाओं को निखारने के लिए पुष्कर आते रहे हैं। इनके अलावा यहाँ बालाजी मंदिर, मन मंदिर, वराह मंदिर, आत्मेश्वर महादेव मंदिर आदि भी श्रद्धा के प्रमुख केंद्रों में से हैं। सरोवर के ही किनारे आमेर के राजा मान सिंह का पूर्व निवास मन महल भी है। हालांकि अब इसे राजस्थान पर्यटन विकास निगम के होटल के रूप में परिवर्तित कर दिया गया है।

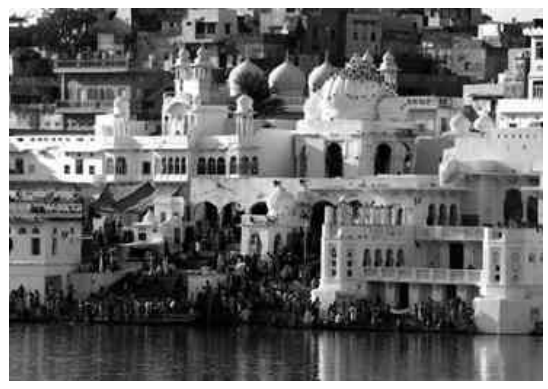

मुट्ठी में तकदीर

गतांक से आगे.....

ब्रह्माण्ड कृपा की कथा, ब्रह्माण्ड प्रभु कहते हैं – माँगो, प्राप्त कर लो, ये उल्लास की, ये उत्साह की, उदास चेहरे को प्रसन्न करने की कथा।

ये 206 हड्डियों के जागृत होने की कथा, ये कथा है 6 लीटर रक्त हमारे शरीर में प्रति क्षण दौड़ रहा हैं। उस प्रति क्षण का कई रेड ब्लड सेल हैं, कई व्हाईट ब्लड सेल है, कई प्लेटलेट हैं। आप की आर.बी.सी. कितनी है। आपकी सी.बी.सी. क्या है ? आपका मन कैसा चल रहा है। मन की चंचलता का शमन कैसे हो ? अभी कुल ही सुन रहा था, एक आवाज दूर से आ रही थी –

मन की तरंग मार लो, बस हो गया भजन,
आदत बुरी सुधार लो, बस हो गया भजन।

ये बुरी आदत को सुधारने की कथा। जब–जब अधर्म ने धर्म पर प्रहार किया, जब कठोरता बढ़ी, नरमाई अकुला उठी, जब असत्य बढ़ा, कहीं सत्य को तकलीफ हुई, लेकिन सत्य पराजित नहीं होता, हमेशा धर्म सत्य ही है। –

सत्य–सत्य है एक मुखी है,
उसके दो मुख कभी नहीं होते।
धर्म–धर्म ही वह रक्षक है।
धर्म रक्षक है। धर्मो रक्षति रक्षितः –
जो धर्म की रक्षा करेगा उसकी धर्म रक्षा करेगा।

ये मानव धर्म की कथा।

अभी–अभी मंगलाचरण में आपने प्रणाम किया, आईये, प्रणाम करे धरती से भारी माताजी को, परम पूज्य माताश्री–सोहनी देवी माताजी, जिन्होंने मुझे बचपन से गीता का ज्ञान दिया। पूज्य राधेश्याम अग्रवाल साहब को, जगदीश आकाश को, श्री सत्यनारायण को, परिवार को। माताश्री आपको प्रणाम करता हूँ। पिताश्री मदनलाल जी अग्रवाल साहब आज भी जब स्मरण करता हूँ, गंगाजी के बीच में, टापू पर आप बिराजे हैं, ध्यान अवस्थित होकर, आप धर्म को धारण कर रहे हैं, मैं निहाल हो गया पूज्य पिताश्री, मैं निहाल हो गया। आदरणीय परम् पूज्य गुरूदेव आचार्य श्रीराम जी शर्मा, परम् पूज्य गुरूदेव संत ज्ञानदास जी महाराज, 1008 कोटि–कोटि के नायक, मैं निहाल हो गया, डॉ. रामकुमार जी महामण्डलेश्वर जी 1008 मैं आपको नमन करता हूँ, मैं प्रणाम करता हूँ सेवा धर्म के मसीहा पूज्य राजमल जी भाई सा. को, नमन करता हूँ कैंसर विशेषज्ञ डॉ. आर. के. अग्रवाल साहब को, पी. जी. जैन साहब को, चेनराज जी लोढ़ा साहब को।

अष्टादश पुराणेषु व्यासस वचन द्वयो।
परोपकार पुण्याय, पापाय पर पीड़नम्।

वेद व्यास जी महाराज को प्रणाम करते हैं जिन्होंने 18 पुराणों का नवनीत हमें पिला दिया, मक्खन पिला दिया, परोपकार ही पुण्य है और किसी को कष्ट देना ही पाप है। ये निः शक्त, ये घुटनों के बल चलकर आने वाले, ये रेंगकर चलने वाले, ये आसाम से, ये बिहार से, हमारे बीच महाराष्ट्र, यहाँ जो निःशक्त हैं, दिव्यांग हैं, उनको प्रणाम करना चाहते हैं।

नारायण सेवा संस्थान में, जहाँ पर दूर–दराज से रोगीजन आते हैं, लेकर हाथ–पैरों में तकलीफें आते हैं। यहाँ पर उन्हीं का सहयोग मिलता है और वो मुस्कुरा उठते हैं। हिन्दुस्तान से ही नहीं, सरहदों के पार से भी यहाँ लोग आते है। जो आप सहयोग देते हैं, वो कैसे यहाँ पर कार्यरत होता है। कैसे कुरान की बात करें, पुराण की बात करें, गीता की बात करें या मानव धर्म की बात करें, साक्षात कैसा दिखता है, कैसे हमारे भाव कर्म में परिवर्तित होते हैं

ये संस्थान न सिर्फ विकलांगों को शारीरिक रूप से ठीक करती है, अपितु रोजगार एवं प्रशिक्षण के माध्यम से उन्हें विभिन्न क्षेत्रों में दक्षता प्रदान करती है जैसे सिलाई, बुनाई, कढ़ाई, मोबाइल रिपेरिंग, कंप्यूटर ट्रेनिंग ताकि वो आत्मनिर्भर बन सकें। अपने व अपने माँ–बाप के सपनों को पूरा कर सकें, शायद उन्हें भी अधिकार है। हमारी सरकार और हम हमारे भारत देश के लोग ऐसे भाई–बहिनों को दिव्यांग कहते हैं, क्योंकि उनके पास दिव्य अनुभूति है दिव्य काम करने के लिए।

वेदों और पुराणों में लिखा धर्म का सार ।
पर हित में परमात्मा, सुखी रहे संसार।।

वेद हमारे जीवन के आधार हैं, प्रणाम करना चाहिये और वेद से व्यवहार की तरफ हमारा जीवन ऋग्वेद की कृपा से ऐसा पवित्र हो जाय। किसी के काम जो आए, उसे इन्सान कहते हैं। ये इन्सानियत की कथा है नर को नारायण बनाने की कथा है, और इसी लिए ऋग्वेद को, अथर्ववेद को, सामवेद को, यजुर्वेद को अष्टादश पुराणों को, रामचरित मानस की कृपा को, गोस्वामी तुलसीदास जी महाराज को, वेदव्यास जी महाराज की कृपा की प्रार्थना करते हुए। आईये श्रीमद्भागवतगीता, महाभारतजी, आगम–निगम, कुरान, बाईबल सभी धर्म ग्रन्थ और जो गुरूद्वारा में बड़ी कृपा होती है। गुरू ग्रन्थ साहिब, गुरूनानकदेवजी की कृपा, गुरू कबीर की कृपा और सब संतों की, महापुरूषों की प्रार्थना करते हुए। हम इस इन्सानियत के धर्म की कथा में, ब्रह्माण्ड के धर्म की कथा में आगे ....आगे बढ़ें।

आर्तस्वरों को दे सके, राहत के दो बोल।
मिल जायेगा हे प्रभु, साँसों का सब मोल
सुख समृद्धि में खुशहाली, शुद्ध करे हर कर्म।
जीवन की जो बने प्रेरणा, ऐसा मानव धर्म।।

मानव धर्म के महात्म्य के पूर्व आईये बासा की कुल माताजी दुर्गामाताजी की प्रार्थना कर लें। दुर्गामाताजी जो विभिन्न रूपों में कभी सरस्वती होती हैं, कभी शारदा होती हैं, वो माँ जिसके बिना परमात्मा भी अधूरा होता है और हमारी आत्मा भी अधूरी होती है। उस माँ के रूप को, माँ दुर्गा के स्वरूप को हम प्रणाम करते हैं।

बासा गाँव दुर्गा मन्दिर नमन भवानी माँ
मानव धर्म की ध्वजा हाथ सम्भालो आओ देवी दे
दे तू आशीष मेरी बन जायेगी बात।
तू है सब पालन हारी, तुझसे ही जग उजियारा
जो भी आया तेरी शरण में, मिला उसे सहारा
जरा सी करूणा दृष्टि डाल, तू कल्याण कर दे।
सेवा धर्म की राह में राह है मैय्या, रखना हमारी लाज
भक्ति में वो शक्ति है, करें प्रार्थना आज
अरे भक्ति में वो शक्ति है, करें प्रार्थना आज
जरा सी झोली है मेरी, तू पुकार सुन ले।
बासा गाँव दुर्गा मन्दिर नमन भवानी माँ
मानव धर्म की ध्वजा हाथ सम्भालो आ।
ओ देवी दे तू आशीष मेरी बन पायेगी बात
तू है सबकी पालनहारी, तुझसे जग उजियारा
जो भी आया शरण में तेरी, मिला उसे सहारा है
जरा सी करूणा दृष्टि डाल तू कल्याण कर दे।
बोल जगदम्बे मात की जय।
जय हो बासा की दुर्गामाता की जय हो। जय हो, कल्याण करो माँ। मानव धर्म दीक्षित करो माँ।
बोलिये दुर्गा माता की जय, जय हो।

मानव धर्म का महात्म्य जो सुख–दुःख में समभाव बना दे। श्रीमद्भगवतगीता में पर ब्रह्म परमात्मा ने फरमाया

अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करूण एव च।
निर्ममो निरहंकारः समदुःखसुखः क्षमी।

ये धर्म की कृपा, दुःख–सुख में समभाव रहें। क्षमादान रहें, करूणावान रहें, करूणा धर्म है। प्राणी मात्र में प्रेम धर्म है। लाव ऑल, प्यार ऑल। अम्बरीश ने जो क्षमा किया, वो धर्म है और धर्म है – अभिमान का शमन अर्जुन ने कहा–प्रभु देखिये, मेरे गाण्डीव धनुष की वजह से हमने कितना बड़ा महाभारत का युद्ध जीत लिया। भगवान श्रीकृष्ण मुस्करा उठे, अर्जुन तनिक रथ से उतरो तो और पवनपुत्र हनुमानजी को संकेत किया। ऐसे हनुमानजी, रथ से उतरकर पधार गये, रथ धूं–धूं करके जल उठा। अर्जुन के अभिमान का शमन हुआ। परमात्मा देव ने कहा था–ये रथ तो हनुमानजी की कृपा से बचा हुआ था अन्यथा द्रोणाचार्य के बाणों से कभी का यह जल चुका होता।

धर्म क्या है ? अधर्म क्या है ? पाप क्या है ? पुज्य क्या है ? जब–जब आप और हम व्याकुल होते हैं। जब क्रोध की अग्नि शरीर में प्रवेश करती है तो समझिये पाप प्रवेश हो गया, अधर्म प्रवेश हो गया। कुलदागी आ गया, निखट्टुमल आ गया, ये चटोरीमल आ गया, ये बेईमान बेदर्दीमल आ गया, ये नालायकी आ गई, ये दुष्टामल आ गया, ये कठोरतामल आ गया.....

क्रमशः.....

भूत भावन भगवान महाकालेश्वर उज्जैन की पावन धरा पर''

सिंहस्थ कुम्भ महापर्व-2016
नारायण सेवा संस्थान एवं सेवा परमो धर्म (ट्रस्ट), उदयपुर

30 दिवसीय विशाल सेवा, भक्ति, ज्ञान एवं अध्यात्म यज्ञ शिविर

!! दिनांक !! 22 अप्रैल से 21 मई-2016

!! समारोह स्थल !! मंगलनाथ, प्लोट नम्बर-83, 17-22,उज्जैन

उज्जैन की धरा पर हमारे प्रकल्प (दिनांक 22 अप्रैल से 21 मई तक)
विकलांगता जांच शिविर प्रतिदिन प्रातः 9 बजे से 11 बजे

भोजन सहयोग (एक समय) 2100/- प्रतिदिन
छः या चार व्यक्ति सामूहिक आवास व्यवस्था 2100/-प्रतिदिन

आवास व्यवस्था (सेपरेट) 1500/- प्रति रुम

डोरमेट्री 500/- प्रतिदिन

मुख्य आयोजन एवं शाही स्नान

22 अप्रैल 2016 :सिहंस्थ प्रथम पर्व स्नान
1 से 6 मई-2016:पंचशनि यात्रा
3 मई,2016:वरूथिनी एकादशी
6 मई,2016:पर्व स्नान
9 मई,2016:अक्षय तृतीया
11 मई,2016:शंकराचार्य जी जयंती
15 मई,2016:वृषभ संक्रांति
17 मई,2016:मोहिनी एकादशी
19 मई,2016:प्रदोष पर्व
20 मई,2016:नृसिंह जयंती
21 मई,2016:शाही स्नान

आपश्री यजमान बन सकते हैं।

कथा मुख्य यजमान 1,51,000/-
प्रसादी वितरण यजमान प्रतिदिन 51,000/- (भण्डारा)
भोजन प्रसाद यजमान 11000/- (एक समय)
प्रतिदिन आरती यजमान 5,100/-
नाश्ता सहयोग 5,100/-
जल सहयोग प्रतिदिन 5,100/-
व्यास पूजन यजमान प्रतिदिन 2,100/-

रोगी भोजन सहयोग

50 रोगी प्रतिदिन-दोनों समय 22,000/-
50 रोगी प्रतिदिन-एक समय 11,000/-

विकलांग विवाह

पूर्ण विकलांग विवाह सौजन्य 11,00,000/-
पूर्ण कन्या दान 51,000/-
आंशिक कन्या दान 21,000/-

सम्पर्क करें Tel.:+91-294-6622222, 3990000,Mobile: 09649499999

अपंग, अनाथ, विधवा, वृद्ध एवं वंचितजनों की सेवा में सतत् सेवारत्

नि:शक्तजनों को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने के लिए संस्थान द्वारा नि:शुल्क प्रशिक्षण केन्द्र संचालित किये जा रहे हैं। आपश्री से सादर प्रार्थना है कि ईश्वरीय कार्य में अपना सहयोग प्रदान करावें-मान्यवर !

मोबाइल/होम एप्लायसेंस रिपेयरिंग/कम्प्यूटर/सिलाई/महेन्दी/अगरबत्ती/हार्डवेयर एण्ड नेटवर्किंग प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 7500/-	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 75,000/-
3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 22500/-	20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 150000/-
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 37500/-	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 225000/-

50 रोगियों की आजीवन भोजन / नाश्ता मित्ती

वर्ष में एक दिन दोनों समय की आजीवन भोजन मित्ती सहयोग राशि	- 22,000/-
वर्ष में एक दिन एक समय की आजीवन भोजन मित्ती सहयोग राशि	- 11,000/-
वर्ष में एक दिन की आजीवन नाश्ता मित्ती सहयोग राशि	- 5,000/-

बालगृह शिक्षा सहयोग योजना

एक बच्चे के एक माह की शिक्षा सहयोग राशि	- 600/-
एक बच्चे के एक वर्ष की शिक्षा सहयोग राशि	- 7200/-

आजीवन लालन-पालन योजना 1,00,000/-

आप बन सकते हैं किसी अनाथ निर्धन बच्चे के आजीवन पालनहार 1 लाख रूपयों का अनुदान करके। (एक बच्चा 18 वर्ष तक की आयु तक अथवा 18 वर्ष के बाद भी यदि वह उच्च शिक्षण प्राप्त कर चाहेगा तो संस्थान के सान्निध्य में ही रहेगा।)

भगवान महावीर बालगृह योजना (बालगृह भोजन मित्ती)

एक बालक का एक माह का नाश्ता, भोजन सहयोग राशि	- 2100/-
एक बालक का एक वर्ष का नाश्ता, भोजन सहयोग राशि	- 2100 X12 =25,200/-

एक बच्चे पर सम्पूर्ण वार्षिक खर्च

भोजन खर्च सहयोग राशि	- 2100 X12 = 25,200/-	शिक्षा खर्च	- 600 X 12 = 7200 /-
स्वास्थ्य सम्बन्धी खर्च	- 2500/-	विविध खर्च राशि	- 6900/-
कुल वार्षिक खर्च सहयोग राशि	- 41800/-		

प्रति नि:शक्त शिविर सहयोग राशि - 1,51000/-
सम्पर्क करें-09929534444 E-mail : planning@narayanseva.org

आयकर में छूट-संस्थान को दिया गया दान आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80 G (आयकर दाता) के लिए 50 प्रतिशत तथा 35 AC के तहत (कम्पनियों, प्रतिष्ठानों के लिए) 100 प्रतिशत कर मुक्त (Tax Exempted)

पढ़ेंगे - लिखेंगे होंगे कामयाब

सादर अनुरोध - आपश्री संस्थान की दान प्राप्ति रसीद बुक प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें-0294-6622222,9649499999

मुद्रक–न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, प्रकाशक–कमलादेवी, मुद्रण स्थल–13, भोपा नगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, लिण नगरी, सेक्टर–3 उदयपुर (राज.), प्रकाशन स्थल– ई–डी–71 बप्पा रावल नगर, लिण नगरी, सेक्टर–6, उदयपुर (राज.)
सम्पादक–लक्ष्मीलाल गाडरी, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2014/59353 टेलिफोन नं. – 0294–6622222 मो.–09587720000,09928022275,09214657807,09785039524 www.mannkijeet.com, mankijeet2015@gmail.com

नारायण चिल्ड्रन एकेडमी

आपश्री से विनम्र अनुरोध है कि ग्रामीण क्षेत्रों के निर्धन परिवारों के बच्चों की शिक्षा हेतु अपना योगदान प्रदान करें। ताकि आपश्री के आशीर्वाद एवं योगदान से ये बच्चें आत्म निर्भर होकर देश के विकास में सम्मान के साथ अपना योगदान सुनिश्चित कर सकें।

* एक बच्चे की शिक्षा हेतु दान राशि (कक्षा के जी से बारहवीं तक) – 4.5 लाख रूपयें।
* एक कक्षा (20 बच्चों) की शिक्षा हेतु दान राशि 1 वर्ष के लिए– 6 लाख रूपयें।
* सम्पूर्ण बैच (20 बच्चों) की (केजी से बारहवीं) तक की शिक्षा हेतु दान राशि–90 लाख रूपयें।
* एक बच्चे का शिक्षा, भोजन, स्टेशनरी आदि का सम्पूर्ण मासिक खर्च 2500 रूपये ।
* एक बच्चे का सम्पूर्ण वार्षिक खर्च 30 हजार रूपये ।

अपने बैंक खाते से संस्थान बैंक खाते में जमा करें–अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके। संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS / NEFT Code	Account
Union Bank	-Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148
State Bank of India	-H.M. Sector-4	SBIN0011406	31505501196
State Bank of B. & J.	-Chetak Circle	SBBJ0010209	51004703443
Allahabad Bank	-3, Bapu Bazar	ALLA0210281	50025064419
Punjab National Bank	-Kalaji Goraji	PUNB0297300	2973000100029801
Bank of India	-H.M. Sector-5	BKID0006615	661510100003422
Kotak Mahindra Bank	-8-C, Madhuban	KKBK0000272	0311301094
ICICI Bank	-Madhuban	ICIC0000045	004501000829
ICICI Bank	-H.M. Sector-4	ICIC0006935	693501700159
Bank of Baroda	-H.M, Udaipur	BARBOHIRANM	30250100000721
IDBI Bank	-16 Saheli Marg	IBKL0000050	050104000157292
AXIS Bank	-Uit Circle	UTIB0000097	097010100177030
Yes Bank	-Goverdhan Plaza	YESB0000049	004994600000102
Canara Bank	Madhuban	CNRB0000169	0169101057571
Union Bank of India	Sector-4,Udaipur	UBIN0568783	414302010006168
HDFC	358-Post Office Road, Chetak Circle	HDFC0000119	50100075975997
VIJAYA BANK	Gupteshwar Road Titardi	VIJB0007034	703401011000095
STATE BANK OF PATIALA	Hiran Magri, SEC.-5 Udaipur (Raj.) 313002	STBP0001395	65211670484
BANK OF MAHARASHTRA	Arihant Complex Plot No. 16, Thoran Banwre City Station Marg,udaipur	MAHB0000831	60195864584
CENTRAL BANK OF INDIA	UDAIPUR	CBIN0283505	0000001779800301

नारायण सेवा संस्थान 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

प्रकृति हमसे कुछ कह रही है

भावनात्मक क्षमता का सम्बन्ध एक प्रकार की रचनात्मक कल्पना से है। जहां मानसिक क्षमता का सम्बन्ध बुद्धि से है, वहीं भावनात्मक क्षमता का सम्बन्ध एक ऐसी कल्पना से है, जिसमें कुछ रचने का अद्भुत गुण होता है। यदि आप चाहें तो इसे एक प्रकार से रचनात्मक क्षमता भी कह सकते हैं। वैसे वैज्ञानिक बनना भी रचनात्मकता ही होती है। लेकिन वहाँ प्रधानता बुद्धि की होती है, कल्पना की नहीं, जबकि भावनात्मक क्षमता के अन्तर्गत प्रधानता कल्पना की होती है। बुद्धि दूसरे स्थान पर रहती है।

कलाकार, संगीतकार, साहित्यकार, नृत्यकार, चित्रकार, मूर्तिकार तथा वे व्यक्ति; जो अपने कल्पना जगत को भौतिक आकार देने में सक्षम होते हैं, इसी के अन्तर्गत आते हैं।

प्रत्येक व्यक्ति में रचनात्मकता के कुछ न कुछ अंश मौजूद रहते ही हैं। अक्सर देखा गया है कि अधिकांश व्यक्ति अपनी अल्हड़ता की उम्र में कभी न कभी कविताएँ लिख लेते हैं या कविता की कुछ पंक्तियाँ सोच लेते हैं। लेकिन यह बात अलग है कि ये सभी कवि नहीं बन जाते। हर कोई भले ही खुलकर न गाता हो, लेकिन कम से कम गुनगुनाता तो है ही और मज़ेदार बात है कि बेसुरी आवाज़ में गाने और गुनगुनाने के बावजूद उसे अपनी यह आवाज़ अच्छी भी लगती है। ये दोनों उदाहरण इस बात को प्रमाणित करते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति में रचनात्मकता का गुण बीज के रूप में मौजूद रहता है, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि प्रत्येक व्यक्ति इसी को अपना विशिष्ट गुण मान ले। इस क्षेत्र की भी विशिष्टता की झलक बचपन में ही दिखाई देने लगती है। लता मंगेशकर पाँच वर्ष की उम्र में गुनगुनाने लगी थी। चार वर्ष की उम्र में एक लड़का यदि तबला बजाने लगता है और यदि एक लड़की के पैर इसी उम्र में थिरकने लगते हैं, तो हमें यह समझ लेना चाहिए कि प्रकृति अपनी भाषा में हमसे कुछ कहने जा रही है। हम सुनें और उसे अमल में लाएँ।

नारंगी है गुणकारी

खट्टी नारंगी जुकाम–खाँसी व पित्त करती है। इसके फल भी अधिक मात्रा में खाना हितप्रद नहीं हैं। जिन्हें सर्दी–जुकाम हो वे नारंगी के रस को चीनी मिट्टी के प्याले में कुछ गर्म करके उपयोग में लें। नारंगी के गर्म रस से उन्हें फायदा होगा।

वैज्ञानिक मत के अनुसार नारंगी मे विटामिन 'ए', 'बी' सामान्य मात्रा में, विटामिन 'सी' अच्छी मात्रा में और विटामिन 'डी' अल्प मात्रा में होता है। इसमें लौह और केल्शियम अधिक मात्रा में होते हैं। अतः इसके सेवन से शरीर के वजन तथा रक्त में वृद्धि होती है, रक्त का फीकापन दूर होता है और रक्त लाल रंग का बनता है, दाँतों व हड्डियों की मजबूती बढ़ती है। नारंगी में फॉस्फोरस वगैरह खनिज द्रव्य भी हैं। नारंगी की अपेक्षा मौसम्मी अधिक मीठी होती है, केवल इतना ही, बाकी आरोग्य की दृष्टि से नारंगी मौसम्मी से बढ़कर है। नारंगी में 40 प्रतिशत विटामिन है। इसमें विटामिन 'बी' ज्यादा है, यह इसकी विशेषता है। संधिवात सदृश रोगों में यह रामबाण मानी जाती है। जोड़ों का दर्द, हाथ–पैर का शूल आदि में भी इससे लाभ होता है।

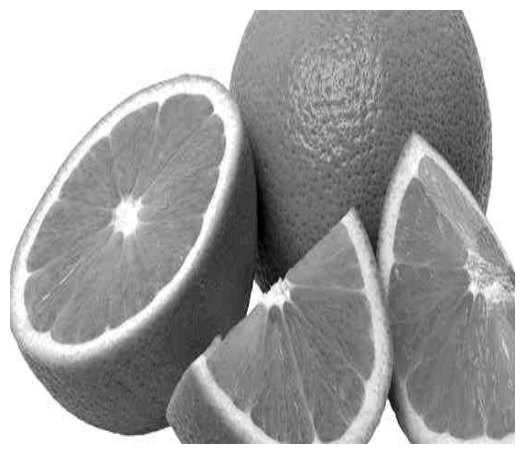

नारंगी इन्फ्लुएन्झा को दूर करने में सहायक बनती है। इसका रस रक्तचाप (ब्लड प्रेशर) में कमी कर फायदा देता है। नारंगी के सेवन से सुखी, खुरदरी और काली पड़ी हुई त्वचा में चेतना आती है, उसकी कोमलता बढ़ती है और वह मुलायम बनती है। नारंगी में खनिज क्षार सर्वाधिक मात्रा में है। इससे शरीर की अम्लता कम होती है।

मंदिर के दहलीज पर खड़े नहीं होना चाहिए

बहुत से मंदिरों के दरवाजे छोटे बनाए जाते हैं ताकि लोग झुककर अंदर जाएँ। यदि कोई मंदिर की दहलीज पर खड़ा होगा तो उसका सिर दरवाजे के ऊपरी भाग से टकरा सकता है। इसके अलावा, अगर कोई इंसान मंदिर के दहलीज पर खड़ा हो जाए तो बाकी लोगों को आने–जाने में असुविधा हो सकती है। इसीलिए यह मान्यता बनी कि मंदिर के दहलीज पर खड़े नहीं होना चाहिए।

दूसरी ओर मंदिर की दहलीज पर यदि कोई खड़ा होता है तो मंदिर के बाहर खड़े लोगों को अंदर की मूर्ति का दर्शन नहीं होगा। कुछ लोग जो जल्दी में होते हैं, बाहर से दर्शन करके जाना चाहते हैं, उन लोगों को ईश्वर के दर्शन करने में दिक्कत हो सकती है।

इसके अतिरिक्त एक कारण यह भी है कि मंदिर की दहलीज पर खड़े होकर ईश्वर की मूर्ति की बराबरी होने लगती है, इसे अहंकार का प्रतीक माना गया है।

लसीका तंत्र

पाचन का अर्थ अघुलनशील पदार्थों को घुलनशील बनाना और विषम यौगिकों में परिणीत करना है। यह क्रिया कहीं कुछ कम और कहीं कुछ अधिक होती है, लेकिन पूरी आहार नली में चलती रहती है। भोजन के पोषक तत्व विशेष पचकर या खण्डित होकर ऐसे घोल के रूप में तैयार हो जाते है जो आसानी से आँत की आन्तरिक झिल्ली द्वारा शोषित हो जाता है। पुनः रक्त या लसीका तंत्र द्वारा शरीर के विभिन्न भागों तक पहुँच जाता है। अतः भोजन के पचे हुए भागों के रक्त या लसीका–तंत्र में मिलने की क्रिया को अवशोषण कहते हैं।

अवशोषण की क्रिया शरीर में दो प्रकार से होती है–

1. रक्तप्रवाही शोषण

2. लसीका प्रणाली शोषण

1. रक्त प्रवाही शोषण– पाचन संस्थान के अन्तर्गत हम जान चुके हैं कि आँतों की भीतरी दीवार श्लेष्मिक कला द्वारा आच्छादित होती है, जिसमें रक्त कोशिकाओं का जाल सा बिछा होता है। पाचन संस्थान में यह भी जान चुके हैं कि पचा हुआ पोषक तत्व आँतों की दीवारों से लगकर जाते समय श्लेष्मिक कलाओं में प्रवेश करके रक्त कोशिकाओं की पतली दीवार द्वारा शोषित होता रहता है। इस प्रकार की शोषण क्रिया को रक्त प्रवाही शोषण कहते हैं।

2. लसीका प्रणाली शोषण– रक्त प्रवाही शोषण द्वारा भोजन के मात्र कार्बोहाइड्रेट का पचा हुआ भाग डेकसट्रोज और प्रोटीन का पचा हुआ भाग एमिनो अम्ल, जल आदि शोषित हो पाते हैं, लेकिन वसा जातीय पदार्थों का शोषण जिस प्रणाली द्वारा शरीर में होता है उसे लसीका प्रणाली शोषण कहते हैं।

इस लसीका प्रणाली द्वारा मात्र भोजन के वसा जातीय पदार्थ ही शरीर की 1–1 कोशिका तक नहीं पहुँचते हैं, बल्कि उन भागों में उत्पत्ति वर्ज्य पदार्थ भी रक्त में ग्रहित हो जाते एवं अवशोषित होने से शेष बचे हुए पदार्थ पुनः लसीका तंत्र द्वारा रक्त में मिल जाते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि यह लसीका तंत्र रक्त परिवहन तंत्र का पूरक है। लसीका क्या है ?–रक्त द्वारा ही तन्तुओं की कोशिकाओं को पोषक तत्व (भोजन) और ऑक्सीजन पहुँचता है और कोशिकाओं द्वारा उत्सर्जित पदार्थ कार्बन डाईऑक्साइड जल आदि रक्त में मिल जाते हैं। यह याद रखें कि कोशिकाएँ कभी भी प्रत्यक्ष रूप से रक्त के सम्पर्क में नहीं आती हैं। वे लसीका के ही सम्पर्क में रहकर उसी से अपना भोजन (पोषक तत्व) ग्रहण करती हैं। जब रक्त, रक्त कोशिकाओं में पहुँचता है, तब कोशिकाओं की पतली दीवारों से छन कर भोजन के सारे पदार्थों से युक्त रक्त प्लाविका का कुछ जलीय भाग निकलता रहता है। सामान्य रूप से इस जलीय भाग को ही लसीका या लिम्फ कहते हैं।

रक्त प्लाविका में ग्लूकोज़, प्रोटीन, वसा, ऑक्सीजन इत्यादि घुले होते हैं। ये पदार्थ ही कोशिकाओं के लिए पोषक तत्व (पदार्थ) होते हैं। कोशिकाओं की दीवारों से बाहर आ जाने से कोशिकाएँ उसमें भीग जाती हैं। इसी लिम्फ (लसीका) से ये अपने पोषक तत्व एवं ऑक्सीजन आदि को ले लेती हैं। साथ ही अपने में से उत्पन्न कार्बन डाइऑक्साइड, यूरिया आदि इसमें दे देती हैं। वैज्ञानिक भाषा में इस विकार युक्त द्रव को लसीका कहते हैं।

लसीका एक रंगहीन पारदर्शी द्रव है। इसमें भोजन के सार तत्व, ऑक्सीजन एवं कार्बन डाईऑक्साइड आदि घुले होते हैं। इसमें रक्त की श्वेत कणिकाएँ भी विद्यमान होती हैं। इसका मुख्य काम शरीर की कोशिका तक पहुँचकर पोषक तत्व पहुँचाना और उत्सर्जित पदार्थ को वहाँ से लाकर रक्त कोशिकाओं में पहुँचाना है। इस प्रकार हम देखते हैं कि लसीका शरीर के तन्तुओं, कोशिकाओं और कोशिकाओं के बीच आदान–प्रदान का एक सफल माध्यम है।

रक्त प्लाविका में पोषक तत्वों का शोषण पूर्ण रूप से कोशिकाओं द्वारा संभव नहीं हो पाता है। अतः विशेष पोषक तत्व एवं रक्त प्लाविका में मिले हुए विकारों का विशेष भाग कार्बन डाईऑक्साइड, यूरिया आदि रक्त की कोशिकाओं में पहुँचकर लसीका प्रणाली [illegible]

सादर आमंत्रण

आस्था चैनल पर सीधा प्रसारण

अपंग, अनाथ, रोगी, विधवा, वृद्ध एवं वंचितजनों की सेवा में सतत् सेवारत

नारायण सेवा संस्थान एवं सेवा परमो धर्म ट्रस्ट, उदयपुर

सहायतार्थ

श्रीमद् भागवत कथा

आयोजक

नांगवेल की पावन नगरी में चौरसिया समाज, मोहन्द्रा

: दिनांक एवं समय :

21 फरवरी 2016, दोप. 1.30 से 3.30 बजे तक

22, 23 फरवरी 2016, प्रातः 10 से 1 बजे तक

24 फरवरी 2016, प्रातः 9 से 12 बजे तक

25 से 27 फरवरी 2016, प्रातः 10 से 1 बजे तक

: स्थान : नागौरी जी महाराज मन्दिर तालाब, ग्राम-मोहन्द्रा, तह. पवई, जिला-पन्ना (म.प्र.)

परम पूज्य कैलाश जी 'मानव' संस्थापक चैयरमेन नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

निवेदक : चौरसिया समाज एवं समस्त ग्राम वासी, मोहन्द्रा

व्यास पीठ पर विराजमान होकर अपने मुखारविन्द से ओजस्वी रसमयी मधुरवाणी द्वारा संगीतमय कथा का श्रवणपान कराएंगी। आपश्री से अनुरोध है कि सपरिवार ईष्ट मित्रों सहित पधारकर श्रीमद् भागवत कथा का श्रवण लाभ उठावें।

स्थानीय सम्पर्क सूत्र : 9977801308, 9303766889, 89599278893

संस्थान सम्पर्क सूत्र : 0294-6622222, 9649499999

पूज्या प्राची देवी जी

प्रशान्त अग्रवाल अन्तर्राष्ट्रिय अध्यक्ष नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

:: 'निःशक्तजन' की सेवा-सहयोग के प्रति समर्पित ::

कैलाश ''मानव'' मैनेजिंग ट्रस्टी एवं संस्थापक नारायण सेवा संस्थान

कमला देवी कोषाध्यक्षा नारायण सेवा संस्थान

प्रशान्त अग्रवाल अध्यक्ष नारायण सेवा संस्थान

वन्दना निदेशक नारायण सेवा संस्थान

जगदीश आर्य ट्रस्टी एवं निदेशक नारायण सेवा संस्थान

देवेन्द्र चौबीसा ट्रस्टी एवं निदेशक नारायण सेवा संस्थान

भक्ति एवं सेवा के महायज्ञ में एक आहुति आपकी भी... कृपया सपरिवार अवश्य पधारें ।

सम्पादकीय

यह विचार खास तौर पर उन महानुभावों के सामने रखा जा रहा है जो सेवा के महत्त्व से तो भलीभाँति परिचित है ही, परन्तु वे उस शुभ मुहुर्त की प्रतिक्षा में हैं जब वे सेवा का यज्ञ प्रारम्भ कर सकें या ऐसे व्यक्ति की तलाश में हैं, जो इनकी सेवा पाने का अधिकारी है।

आदरणीय! आपश्री जानते हैं कि दुनिया में विरले ही लोग होंगे जो ये बता सकें कि उनको कौनसी व्याधि कब घेर लेगी? हमारी आँखों के सामने हर उम्र के हजारों–लाखों परिचित अपरिचित लोग अपनी इच्छाओं को मन में लिये हुए ही इस दुनिया से कूच कर जाते हैं और उनमें से कई ऐसे भी होते हैं जिनमें आप ही की तरह सेवा करने की तीव्र अभिलाषा थी और वे उपयुक्त समय और व्यक्ति का इन्तजार कर रहे थे। संकेत आपश्री समझे ही होंगे। मृत्यु जीवन का एकमात्र सत्य है, ध्रुव सत्य।

माननीय! हम जानते ही हैं लक्ष्मी चंचल होती है। आज वो आपके आँगन में हँसी खुशी से खेल रही है और भगवान न करे, कल रूठ जाये तो? आप तो सही आदमी और सही समय का इन्तजार ही करते रह गये न?

इसलिये जिस क्षण हमारे मन में सेवा करने का विचार उत्पन्न हुआ, वही क्षण सबसे उत्तम है। प्रतीक रूप से मान लीजिये आपके पास एक रोटी है और आप सोचते हैं कि जब मेरे पास दो रोटी हो जायेगी तब मैं एक रोटी उस भूखे बच्चे को दे दूँगा। संयोगवश आपकी वो रोटी भी कुत्ता छीन ले गया, तब?

आज आपके पास एक रोटी है तो आप उसमें से एक कौर दे दीजिये। कल जब आपके पास दो रोटी हो तो पूरी एक दे दें। सेवा में भावना का महत्त्व है– मात्रा का नहीं। जी हाँ, श्रद्धेय, इन दिनों आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं है तो सेवा का कोई ऐसा कार्य चुन लीजिये जिसमें शारीरिक श्रम ज्यादा न करना पड़े पर अनिश्चित जीवन के बेशकीमती समय को व्यर्थ न गँवाइये।

नारायण सेवा संस्थान के अन्तर्गत किये गये नियमित निःशुल्क दिव्यांग ऑपरेशन की सूची

क्र.सं.	रोगी का नाम	पिता/पति का नाम	उम्र	लिंग	शहर	राज्य
1	संगीता	श्री वसन्त	35	स्त्री	नाशिक	महाराष्ट्र
2	दक्ष	श्री नरेश शर्मा	5	पुरूष	सीकर	राजस्थान
3	अलेरा	श्री जीवनलाल	6	पुरूष	बांसवाड़ा	राजस्थान
4	लक्ष्मी देवी	श्री रघुवीर सिंह	8	स्त्री	बरेली	उत्तरप्रदेश
5	मुकद्दास	मोबीन अंसारी जी	9	पुरूष	नवादा	बिहार
6	कुलदीप	श्री मिन्टु सिंह	10	पुरूष	बरेली	उत्तरप्रदेश
7	सोनु	श्री प्रकाश	12	पुरूष	झालावाड़	राजस्थान
8	अमित सिंह	श्री हरिओम	17	पुरूष	मुरादाबाद	उत्तरप्रदेश
9	रूखसार	अनवर जी	19	स्त्री	हजारीबाग	झारखण्ड
10	आरती	श्री कालीदास	23	पुरूष	नड़ियाद	गुजरात
11	सुनिल	श्री रामआसरे	29	पुरूष	हरदोई	उत्तरप्रदेश
12.	अंकुश	श्री कन्हैयालाल	3	पुरूष	नरसिंहपुर	मध्यप्रदेश
13.	दर्श	श्री दीपक	4	पुरूष	सागर	मध्यप्रदेश
14.	लाखनपुरी	श्री कृष्णा दास	5	पुरूष	जांगगीरचंपा	छतीसगढ़
15.	यश	श्री खिलेश साहु	5	पुरूष	बलोदाबाजार	छतीसगढ़
16.	कुमार कादुर	श्री बसय्या	6	पुरूष	हावेरी	कर्नाटक
17.	समीर	जफरूदीन जी	6	पुरूष	पं.चंपारन	बिहार
18.	कल्पना	श्री आशुतोष	6	स्त्री	मुजफ्फरनगर	बिहार
19.	युवराज	श्री शेषनाथ	7	पुरूष	गोरखपुर	उत्तरप्रदेश
20.	चेतन	श्री हुच्चाना	7	पुरूष	हावेरी	कर्नाटक
21.	शिवम	श्री दुर्गेश	7	पुरूष	झाबुआ	मध्यप्रदेश
22.	एजाज	मुजीब जी	8	पुरूष	रीवा	मध्यप्रदेश
23	भरत	श्री उमेश	9	पुरूष	शिमागो	कर्नाटक
24.	लोकेश	श्री मनोहर	9	पुरूष	चित्तौड़गढ़	राजस्थान
25.	रोहन	श्री श्याम चाहले	9	पुरूष	नाशिक	महाराष्ट्र
26.	राजा	श्री बिशम्बेर जाटव	12	पुरूष	भरतपुर	राजस्थान
27.	सोनु	श्री गंगादयाल	15	पुरूष	कासगंज	उत्तरप्रदेश
28.	गोलु सिंह	श्री गोनी सिंह	16	पुरूष	भिण्ड	मध्यप्रदेश
29.	सुशील	श्री सुभाष	18	पुरूष	जलगांव	महाराष्ट्र
30.	कल्लु	श्री सत्यप्रकाश	23	पुरूष	मैनपुरी	उत्तरप्रदेश
31.	अर्चित	श्री मुकेश शर्मा	27	पुरूष	अलीगढ़	उत्तरप्रदेश
32.	लक्ष्मण	श्री गुथयप्पा	29	पुरूष	शिमोगा	कर्नाटक
33.	रेणु	राकेश कोली	31	पुरूष	हरिद्वार	उतराखण्ड

क्रमशः अगले अंक में

भजन

जैसे सूरज की गर्मी से जलते हुए तन को
मिल जाये तरुवर की छाया
ऐसा ही सुख मेरे मन को मिला है
मैं जबसे शरण तेरी आया, मेरे राम
भटका हुआ मेरा मन था कोई
मिल ना रहा था सहारा
लहरों से लड़ती हुई नाव को
जैसे मिल ना रहा हो किनारा,
मिल ना रहा हो किनारा
उस लड़खड़ाती हुई नाव को जो
किसी ने किनारा दिखाया
ऐसा ही सुख ...
शीतल बने आग चंदन के जैसी
राघव कृपा हो जो तेरी
उजियाली पूनम की हो जाए रातें
जो थीं अमावस अंधेरी, जो थीं अमावस अंधेरी
युग– युग से प्यासी मरुभूमि ने
जैसे सावन का संदेस पाया
ऐसा ही सुख ...
जिस राह की मंजिल तेरा मिलन हो
उस पर कदम मैं बढ़ाऊं
फूलों में, खारों में, पतझड़ बहारों में
मैं न कभी डगमगाऊं, मैं न कभी डगमगाऊं
पानी के प्यासे को तकदीर ने
जैसे जी भर के अमृत पिलाया
ऐसा ही सुख ...

–शर्मा बन्धु

श्रीकृष्णावतार की विलक्षणता

अधकिंच, ब्रजवासियों पर इंद्र के क्रोध करने पर मात्र सात वर्ष की स्वल्पायु में उन्होंने गोवर्धन पर्वत को अपनी कनिष्ठिका से उठाकर भीषण वृष्टिसे ब्रजवासियों की रक्षा की इंद्र का मान मर्दन किया। सृष्टिकर्ता ब्रह्मदेव के द्वारा गोचारण के बीच से सारे गोप–ग्वाले और गौओं की रचना कर ब्रह्म गर्व का हरण किया। सबसे महान विस्मय कारी लीला थी 'महारास'। केवल आठ वर्ष की उम्र में युग विशेष की पूंजी भूत शरदपूर्णिमा की रात्रि में यमुना तट पर मधुवन में सहस्त्र गोपियों के साथ उन्होंने इसी महारास का धरावतरण किया था। इसमें भी एकमेव वही नायक थे, यद्यपि प्रत्येक गोपिका गर्वोल्लसित थी कि नृत्यमय श्रीकृष्ण उसकी ही भुजा से संश्लिष्ठ हैं। यथा – ''अंगनामंगनासंगना माधवो। माधवं –माधवं प्रति चांगना।'' सारा जगत तो उस ब्रह्मरात्रि की माया में निमग्न था किन्तु कैलाश – ब्रह्मलोक और स्वयं बैंकुठ, सप्तावरण इस महालीला का साक्षी बन गया था। सिद्धों ने अनुभव किया कि समस्त पुण्यात्मा श्रुति ऋचाएँ ही गोपांगनाओं के रूप में पारब्रम्ह कृष्ण की लीला सहचरी हैं जो गंवार ग्वालिनों के रूप में प्रीति के उस महासागर में तैर रही हैं। यह पारब्रम्ह की परालीला थी जिसे आज तक दुहराया नहीं जा सका है।

श्रीकृष्णावतार की सबसे विलक्षण बात हैं–महाभारत में विषाद ग्रस्त अर्जुन को कर्मयोग की मूल्यवान शिक्षा देना। उन्होंने ''कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन'' कहकर भगवतर्पणपूर्वक निष्काम भाव से कर्म करते हुए महाभारत में जय की प्रेरणा दी। श्रीमद्भागवतगीता की इस शिक्षा ने श्रीकष्ण को जगद्गुरु बना दिया। सारा संसार उन्हें 'श्रीकृष्णं वंदे जगद्गुरुं' कहकर पूजा करता है।

नाम से बड़ा – कर्म

एक बार एक राजा के यहां विवाह के कई वर्ष पश्चात् संतान उत्पन्न हुई। राजा ने कहा कि मेरी इस संतान का नाम कुछ विशेष चाहिए। अपने आदमियों को कहा कि –जगह–जगह तुम जाओ और अच्छे–अच्छे नाम मालूम करो। दूर देश से भी नाम मालूम करो। मैं अपनी संतान का श्रेष्ठतम् नाम रखना चाहता हूं। चारों दिशाओं में लोग दौड़ाए, उन लोगों ने सब जगह लोगों के नाम पूछे, आखिर राजाके पुत्र का नाम रखना था।

एक मंत्री ने जाते–जाते रास्ते में देखा कि एक शव यात्रा निकल रही है। उसने पूछा कि जिसकी शव यात्रा है उसका नाम क्या है ? लोगों ने कहा कि जिसकी शव यात्रा निकल रही है उसका नाम 'अमर सिंह' है। मंत्री ने कहा – 'अमर सिंह नाम है और ये तो मर गया ? बड़ी ही विचित्र बात है। गजब है –'अमर सिंह' तो मर गया।

एक मंत्री ने दूसरी दिशा में आगे जाकर देखा कि एक अंधा व्यक्ति लाठी का सहारा लिये हुए चल रहा है, उसने सोचा कि – इसका नाम पूछता हूं। उसने पूछ अरे! भाई आपका नाम क्या है ? तो उस व्यक्ति ने उत्तर दिया कि मेरा नाम 'नयनसुख' है। मंत्री ने कहा कमाल है, नाम है 'नयनसुख' और नयन अर्थात् आंखें ही नहीं है। जन्म से अंधा है, बड़ी विचित्र बात है।

एक दिशा में मंत्री ने एक महिला को गोबर के उपले थापते हुए दूखा और फिर पूछा कि – बेटी तुम्हारा नाम क्या है? तो उसने कहा कि–मेरा नाम 'लक्ष्मी' है। मंत्री आश्चर्यचकित होकर रह गया। नाम है लक्ष्मी और मजदूरी कर रही है।

ऐसे पचासों जगह नाम पूछे कोई नाम का दया सागर लेकिन कर्मों से गुण्डा, कोई नाम का विद्यासागर लेकिन ज्ञान में अनपढ़। नाम पूछते–पूछते थक गया, कहीं नाम में और कर्म में सार्थकता ही नहीं। थक हार कर राजा के पास वापस आए और बोले कि हे राजन्! इस संसार का चक्र बड़ा अजीब है।

अमर सिंह तो मर गया ....
नयन सुख को नयन नहीं.....
लक्ष्मी थापे गोबर ....
विद्यासागर तो निरक्षर......

हे राजन् आप अपने पुत्र का नाम कुछ भी रख दो। यह केवल नाम से महान् चक्रवर्ती नहीं हो सकता है। कर्म से ही महान् हो सकता है। वास्तव में यह यर्थात् सत्य है कि नाम से कोई व्यक्ति महान् नहीं होता है। मनुष्य कर्म से और अपनी शक्ति से ही महान् होता है। ऐसा सुन्दर श्रेष्ठ कर्म करना है, जिससे हम काल पर, समय पर हावी हो सके। प्रत्येक मनुष्य में यह क्षमता है, वह समय और परिस्थितियों को अपने अनुकूल कर सकता है लेकिन आवश्यक है कि वह अपनी ज्ञान और बुद्धि का उपयोग करे। वह अपने विवेक का उपयोग करे। विवेक, ज्ञान और बुद्धि द्वारा अपने कर्म को श्रेष्ठ बनाना है।

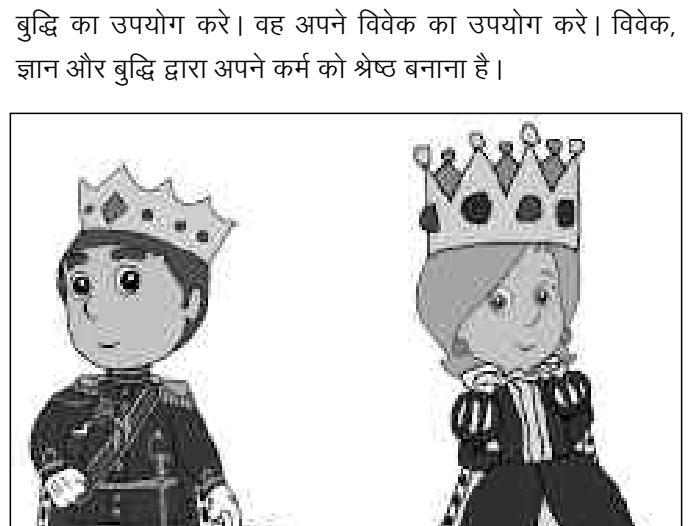

शिष्य ने अपने गुरू से पूछा

सुख और दुःख, दिन एवं रात के समान प्रतिपल साथ रहने वाले हैं, मगर चाहते सब सुख को हैं, दुःख को नहीं। सुख सबको प्रिय लगता है दुःख नहीं, मगर सुख प्राप्ति की विधि कोई नहीं जानता। गुरु सुख की कुँजी जानते हैं। इस दृष्टि से शिष्य ने पूछा –

सुख कहाँ से मिले ?

संसार सारा सुख की खोज में है परन्तु सुख मिलता है

–शान्ति से।

शान्ति कैसे मिले ? –चित्त की स्थिरता से।

चित्त में स्थिरता कैसे रहे ?

–आशा–तृष्णाओं को छोड़ने से।

आशा–तृष्णा कैसे छूटे ?

–अनासक्ति से।

अनासक्ति कैसे प्राप्त हो ?

–बुद्धि में रहे मोह को छोड़ने से।

इसका अर्थ हुआ

–मोह को छोड़े बिना सुख नहीं।

जंतुओं में परोपकारिता

- लेमूर और कपियों की अनेक प्रजातियों में यह व्यवहार पाया जाता है कि जब समूह के अन्य सदस्य भोजन कर रहे होते हैं तो कोई एक सदस्य बाहरी शिकारी के हमले के अंदेशे में चौकसी करता रहता है।
- समुद्री पशु वॉलरस को अक्सर अनाथ पशु–शिशुओं को अपनाते हुए देखा गया है।
- बंदर अक्सर आस–पास शिकारी जंतु के होने पर एक विशिष्ट चेतावनी वाली ध्वनि उत्पन्न करके समूह के अन्य साथियों को आगाह करते हैं।
- अधिकांश मांसाहारी स्तनधारी जैसे भेड़िए या कुत्ते समूह के कम उम्र के जानवरों या मादाओं पर प्रायः हमला नहीं करते हैं।
- पक्षियों की अनेक प्रजाति में वयस्क पक्षी अन्य पक्षियों के शिशुओं की देखभाल और रक्षा करते हैं।
- वैम्पायर चमगादड़ आम तौर पर समूह के कमजोर या बीमार सदस्यों को खून उगल कर खाने को देते हैं ताकि उन्हें खुराक मिल सके।
- चिपैंजी और गिब्बन, समूह के अन्य सदस्यों के साथ खाद्य सामग्री मिल–बांट कर खाते हैं।
- भेड़िए और जंगली कुत्ते शिकार करने के बाद कुछ बचा हुआ मांस उन सदस्यों के लिए ले आते हैं जो शिकार के वक्त मौजूद नहीं थे।
- प्राकृतिक अवस्था में देखा गया है कि कुत्ते अक्सर अनाथ बिल्ली, गिलहरी, बत्तख और यहां तक कि बाघ के शिशुओं को पनाह देते हैं।

मुख्य कार्यकारी अधिकारी–कैलाश 'मानव'
मार्गदर्शक–प्रशान्त अग्रवाल,
जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा
मार्गदर्शिका–कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल
सहायक प्रबन्धक–सोहन लाल गाडरी
संपादक–लक्ष्मीलाल गाडरी
संपादन सहयोगी–घनश्याम सिंह राठौड़

मुद्रक–न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, प्रकाशक–कमलादेवी, मुद्रण स्थल–13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर–3 उदयपुर (राज.), प्रकाशन स्थल– ई–डी–71 बप्पा रावल नगर, हिरण मगरी, सेक्टर–6, उदयपुर (राज.)
सम्पादक–लक्ष्मीलाल गाडरी, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2014/59353 टेलिफोन नं. – 0294-6622222 मो.–09587720000,09928022275,09214657807,09785039524 www.mannkijeet.com, mankijeet2015@gmail.com